इस कविता में एक बच्ची की उस वयस्क दृष्टि का वर्णन है जिससे वह अपने निम्न मध्यवर्गीय पिता के संताप को देख रही है, उस संवेदनशीलता का भी जिसके रहते वह अपने पिता के दुखों में साझा करती हैं। दूसरी ओर मर्माहत पिता का भावावेग है जहां वह बच्ची की मासूम दुनिया के विरुपित होने से आहत है।

बिटिया

❑ ओमेन्द्र

मेरी नन्ही बिटिया
क्यों करती हो चिंता तुम
पापा के खाना ना खाने की
देखो, बाकी घर वालों को देखो
वे कैसे खड़े हैं, कविता के खिलाफ

गुड़िया से खेलने की उम्र में
कविता लिखकर
क्यूं बढ़ाती हो मेरे मन का संताप

पापा को परेशान मत करो
पापा को आराम करने दो
पापा आपके लिए पानी लाऊं
पापा लो, तकिया ले लो
भैया पापा से पैसे मत मांगना
उनको इसी महीने देनी है फीस स्कूल की

पापा आप उदास क्यूं हैं
मैं बीमार हूं इसलिए
नहीं पापा नहीं ऐसे उदास मत हो
मैं हूं न !

तुम क्या हो मेरी बच्ची
मेरी दादी या मेरी बिटिया
आज में बहुत उदास हूं बिटिया
सहन नहीं होता इतना प्यार मुझसे
बस करो बिटिया बस करो ! ◆